श्रीगणेशायनमः॥ शिरोगाङ्गवासं जटाजूटभासं मनोजादिनाशं सदादिग्विकासम्॥ हरं चाम्बिकेशं शिवेशं महेशं शिवं चन्द्रभालं गिरीशं प्रणौमि ॥१॥ स

१ शिवायाः ईशः।

 दाविघ्नदा[1]रं गले नागहारंमनो
 जप्रहारं तनौभस्मभा[2]रम् ॥ म
हापापहा[3]रं प्रभुंकान्तिधारंशिवं
चन्द्रभालंगिरीशंप्रणौमि ॥ २ ॥
शिवंविश्वनाथं प्रभुंभूतनाथं सु

१ हविदारणं । २ दुर्नृ[illegible] । ३ हृन्हरणे ।

रेशादिनाथंजगन्नाथनाथम् ॥ २
तीनाथनाशंकरंदेवनाथंशिवं च
न्द्रमालंगिरीशंप्रणौमि ॥ ३ ॥ ध
नेशादितोषं[1]सदाशत्रुकोषं[2] महा
मोहशोषं[3]जनान्नित्यपोषम्[4] ॥ म

१ तुषप्रीतौ । २ कुषाहसायाम् । ३ शुषशोषे । ४ पुषपुष्टौ ।

गि० हालोभरोषं शिवानित्यजो[2]षं

२ शिवंचन्द्रभालंगिरीशं प्रणौमि॥

॥ ४॥ ललाटे च बालं शिवंदुष्ट

कालं सदाभक्तपालंदधानंकपा २

लम् । माहाकालकालस्वरू

---

१ रुषहिंसायाम् । २ जुषीप्रीतिसेवनयोः ।

पंकरालं शिवंचन्द्रभालंगिरीशं
प्रणौमि ॥ ५ ॥ परब्रह्मरूपं
विचित्रस्वरूपं सुराणांसुभूपंम
हाशान्तरूपम् ॥ गिरीन्द्रात्मजा
संगृहीतार्द्धरूपं शिवंचन्द्रभालं
गिरीशंप्रणौमि ॥ ६ ॥ सदागङ्गपा

नंसुमोक्षादिदानंस्वभक्तादिमा
नंप्रभुंसर्वज्ञानम् ॥डमरुंत्रिशूलं
कराभ्यांदधानंशिवं चन्द्रभालं
गिरीशंप्रणौमि ॥७॥अजिनादि
गो[1]हं रतीनाथमोहंसदाशत्रुद्रो[2]हं

१ गुहूसंवरणे। २ द्रुहजिघांसायाम्।

शिवंनिर्विमोहम् ॥ विभुंसर्वका
लेश्वरं कामद्रोहंशिवंचन्द्रभालं
गिरीशंप्रणौमि ॥८ ॥ द्विजन्मा
नुसेवंप्रभुंदेवदेवंसदाभूतसेवंग
णशादिदेवम् ॥ पतङ्गादिदेवं
हिरण्यादिदेवं शिवं चन्द्रभालं

मि० गिरीशंप्रणौमि ॥ ९॥ अदेवप्र स्तो०
मा[1]रंशिवंसर्व[2]सारं नराणांविभा[3]रं
४ गणेशादिपा[4]रम् ॥ महारोषहा[5]
रंहलङ्कारधारं शिवं चन्द्रभालं
गिरीशंप्रणौमि॥ १०॥नरोयस्त्रि ४

---

१ मृङ्प्राणत्यागे । २ सृगतौ । ३ डुभृञ्धारणपोषण योः । ४ पृपालने । ५ हृञ्हरणे ।

कालेपठेद्भक्तियुक्तः शिवंप्राप्य
सद्यस्त्रिलोकेप्रसिद्धम् ॥ धनंधा
न्यपुत्रंकुटुम्बादियुक्तं समासा
द्यमित्रंसुमुक्तिंव्रजेत्सः ॥ ११ ॥
इति श्रीमिश्रकुंजविहारिणा

कृतं गिरीशस्तोत्रं समाप्तम् ।

शुभंभूयात् ।

विज्ञप्ति ।

विदितहो कि कान्यकुब्जमें उत्पन्न जगन्नाथा
त्मज कुंजविहारीने इस गिरीशस्तोत्रको बनाकर
प्रसिद्ध किया और कुंजविहारीके पिताका
नाम हरिचरणमिश्र जिन्होंने देहलीते पांचकोश
पर ग्राम हलोर है तहां पर श्रीमृत्युंजयशास्त्री रहते
जहांकी चंद्रिका अबतक प्रसिद्ध है तहांपर

भेजकर अध्ययन कराया है रहनेवाले जिला रायबरेली ग्राम देहलीमें निवास है ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीवि
श्वेश्वराय नमः ॥ ॐ ॥ जय ग
ङ्गाधर जय गिरिजाधीश ॥ हर
जय गिरिजाधीश ॥ त्वंमाम्पा
लय नित्यं कृपयाजगदीश ॥

हरहरहरमहादेव ॥ १ ॥ कैला
सेगिरिशिखरे कल्पद्रुमाविपिने।
गुञ्जतिमधुकरपुञ्जे कुञ्जवने ग
हनें ॥ कोकिलकूजतिखेलति
हंसावनललिता । रचयतिक

लाकलापं नृत्यातिमुदसहिता ।
हरहरहरमहादेव ॥ २ ॥ तस्मि
न्सुललितदेशेमालामणिरचिता
॥ तन्मध्येहरनिकटे गौरीमुद
सहिता॥हरहरहरमहादेव॥३॥

शि० क्रीडारचयतिभूषा अम्बरआति स्तु०
८ मीशम्॥इन्द्रादिकसुरसेवित प्र
णमतितेशीशम् ॥हरहरहरमहा
देव ॥ ४ ॥ विबुधवधूबहुनृत्याति ८

हृदयमुदसाहिता ॥ किन्नरगा

नंकुरुते सप्तस्वरसहिता ॥ हर
हरहरमहादेव ॥ ५ ॥ धिनधिन
कथयतिधिद्धिमृदङ्गंवादयते ॥
कणक्कणललितावेणुंमधुरंनादरं
नादयते ॥ हरहरहरमहादेव

शि०	१	स्तु०	१

॥ ६ ॥ रणुरणुरचयति नूपरमु
ज्ज्वलिता ॥ चक्रावर्तीभ्रमयाति
कुरुतेतांधित्काम् ॥ हरहर
हरमहादेव ॥७॥ तांतांलुप्चुप्
तालं नादयते ॥ अगुष्ठांगुलिना

दं लास्यगतंकुरुते ॥ हरहरहर
महादेव ॥ ८ ॥ कर्पूरद्युतिगौरं
पंचाननसहितम्॥त्रिनयनशशि
धरमौलेविषधरकंठयुतम्॥हरह
रहरमहादेव ॥ ९ ॥ सुंदरजटा

कलाप पावकयुतभालम् ॥ डम
रु त्रिशूलकपालं करधृतमृगहा
रम् ॥ हरहरहरमहादेव ॥ १० ॥
शंखनिनादंकृत्वा झलरीं नाद

यते ॥ नीराजयतेब्रह्मा वेद

चतुःपठते॥हरहरमहादेव ११॥
इहमृदुचरणसरोजं हृदिकमले
धृत्वा ॥ अवलोकयातिमहेशंअ
भि नत्वा ॥ हरहरहरमहादेव॥
॥ १२ ॥ रुंडे रचिता उरमाला

पन्नगउपवीतम् ॥ वामविभा
गेगिरिजारूपं अतिललितम् ॥
हरहरहरमहादेव ॥१३॥ सकल
शरीरेमनसिजकृतभस्माभरणं॥
इतिवृषभध्वजरूपंतापत्रयहरण

म् ॥ हरहरहरमहादेव ॥ १४ ॥
ध्यानं आरातिसमयेअतिभूत्वा
रामात्रिजटानाथं ॥ ईशं आभि
नत्वा ॥ हरहरहरमहादेव ॥ १५ ॥
संध्यात्रितयंप्रातिदिनपठनंयः कु

रुते ॥ शिवसायुज्यं गच्छति भ
क्त्यायः शृणुते ॥ हरहरहरमहा
देव ॥ ११ ॥ इति श्रीशिवस्तु
ति समाप्ता ॥ ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासा-
त्मज-क्षेमराजेन स्वकीये "श्रीवें-
कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम्
संवत् १९६५ शके १८३०.

जाहि- रात.

क्रय्यपुस्तकानि (स्तोत्रग्रंथः)

नाम०	की० आ० पा०
मृत्युंजयस्तोत्रम्	१—६
चतुःश्लोकीभागवत—और सप्तश्लोकीगीता ...	०—६
शिवतांडवस्तोत्रमूल	०—९
” तथा भाषाटीका पं ज्वालाप्रसादकृत	१—०
आदित्यहृदय —वाल्मीकीयरामायणका ...	१—०

नाम०	की० आ० पा०
पंचमुखी और एकमुखि हनुमान्कवच ...	१—६
महाविद्यास्तोत्र	०—९
चंडिकास्तोत्र	१—९
शनिमृत्युंजयस्तोत्र	१—६
यमुनालहरी—भाषाटीकासहित	१—०
शतनामाकरस्तोत्र	१—०
द्रव्यस्तोत्र—भाषाटीका	१—६
श्रीकृष्णाष्टक-सटीक	१—०

जाहि- रात.

नाम०	की० आ० पा०
गजेंद्रमोक्ष–भाषाटीका ३– तथा भाषा...	१–६
देव्याऽपराधक्षमापनस्तोत्रम्	१–६
निकुंजदेवीस्तोत्रस्तवराज ...	१–०
संतानगोपालस्तोत्र–स्त्रियोंको अवश्य पाठ करनेयोग्य	१–६
महाकालशनिमृत्युंजयस्तोत्र–इसके पाठसे रोगदूर होतेहैं	१–६

नाम०				की० आ० पा०
पांडवगीतामूल	...	...	...	२—०
पांडवगीता—भाषाटीकासमेत		...	...	३—०
आदित्यहृदय छोटाअक्षर—		...	...	१—०
तथाभाषाटीका	...	...	...	३—०
रकारादिश्रीरामसहस्रनाम—(ब्रह्मयामलोक्त				३—०
मकारादिश्रीरामसहस्रनाम रुद्रयामलोक्त)				३—०

पता—खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-मुंबई.

इति

गिरीशस्तोत्र-शिवस्तुति-

समाप्तिः ।

अथ

कमलनेत्रस्तोत्र-

प्रारंभः ।

इति

गिरीशस्तोत्र-शिवस्तुति-

समाप्तिः ।

अथ

कमलनेत्रस्तोत्र-

प्रारंभः ।

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन, निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ

श्रीकमलनेतर कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरम्॥ मुकुट कुंडल कर लकुटिया सांवरे राधेवरम् ॥१॥ कूल जमुना धेनु

क. आगे सकल गोपीजनं मन स्ता.
२ हरम् ॥ पीतवस्त्र गरुड वाहन
चरण सुख नित सागरम् ॥२॥
करत केलि कलोल निशिदिन २
कुञ्ज भवन उजागरम्॥ अचल

७

अमल अडोल निश्चल पुरु
षोत्तम अपरापरम् ॥ ३ ॥ दी
नानाथ दयाल गिरिधर कंस
हिरणाकसहरम् ॥ गल फूलमाल
विशाल लोचन अधिक सुं

दर केशवम् ॥ बंशीधर वसुदेव
छइया बालि छल्यो है श्री
वामनम् ॥ ४ ॥ जलडूबते गज
राखलीनो लंका छेद्यो रावनम्॥

सप्त द्वीप नव खंड चौदा भवन

कीनो रामजी यकपलम् ॥५॥
द्रौपदीजीकी लाज राखी कहाँ
लौ उपमाकरम् ॥ दीनानाथ
दयाल पूरण करुणामय करुणा
करमू ॥ ६ ॥ कवि दत्तदास वि

लास निशिदिन नाम जप नित
नागरम्॥प्रथम गुरुजीके चरण
वन्दौं यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ॥
॥ ७ ॥ आदि विष्णु जगादि
ब्रह्मा सेविते शिव शंकरम् ॥

श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव
कृष्ण यदुपति केशवम् ॥ ८ ॥
श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम
रघुवर राघवम् ॥ श्रीराम कृष्ण
गोविंद माधव वासुदेव श्रीवा

मनम् ॥९॥ मच्छ कच्छ वराह
नरसिंह पाहि रघुपति पावनम्॥
मथुरामें केशवराय विराजे
गोकुल बाल मुकुंदजी ॥ ॥ ५

श्रीवृंदावनमें मदन मोहन गो

पीनाथ गोविंदजी ॥ १० ॥ यत्र
मथुरा यत्र गोकुल जहां श्री
पति अवतरे॥धन्य जमुना नीर
निर्मल ग्वाल बाल सखा वरे ॥
॥ ११ ॥ नवनीत नागर करत

निरतत शिव विरिंच मनमों
हितम्॥कालिंदी तट करतक्रीडा
बाल अद्‌भुत सुन्दरम् ॥ १२ ॥
ग्वाल बाल सब सखा विराजे

संग राधे वामने ॥ बंसीवटतट

निकट जमुना मुरलीके टेर
सुनावही ॥ १३ ॥ भज राधे
रघुवंश उत्तम परम राजकुमा
रंजी ॥ सीताके पति भगतनि
गतन जगत्प्राण उधार जी ॥

क. स्तो.

॥ १४ ॥ जनकराजा पनक

राखो धनुष बाण चढावहीं ॥

सती सीता नाम जाके श्री

रामचन्द्र प्रणामहीं ॥ १५ ॥ ७

जन्म मथुरा खेल गोकुल नंदके

हृदि नंदनम् ॥ बाललीला पति
त पावन देवकी वसुदेवकम् ॥
॥ १६ ॥ श्रीकृष्ण कलिमल
हरण जाके जो भजे हरिचरण
को ॥ भगत अपने देह माधव

क. भवसागरेक तरणको ॥ १७ ॥ स्तो.

८ जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्री

बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥ द्वारि

काके नाथ श्रीपति केशवं ८

प्रणमाम्यहम् ॥ १८ ॥ श्रीकृ

षण अष्टपद पढत निशि दिन
विष्णुलोक स गच्छते ॥ श्री
गुरु रामानन्द अवतार स्वामी
कवि दत्तदास समापते ॥१९॥

॥ इति श्रीकमलनेत्रस्तोत्रं समाप्तम् ॥

जा. रा.

९

क्रय्यपुस्तकानि-(स्तोत्रग्रन्थाः।)

नाम.			की. रु. आ.	
भवानीसहस्रनाम	...	...	०—४	
भैरवसहस्रनाम	...	...	०—२	
महालक्ष्मीस्तोत्र	...	...	०—१॥	९
महाविद्यास्तोत्र	...	...	०—।।।	

महाकालशंनिमृत्युञ्जयस्तोत्र—इसके पाठसे

नाम.	की. रु. आ.
सबरोग दूर होते हैं. ...	०—१
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र ...	०—।।।
देवीस्तोत्र पञ्चक— ...	०—१।।
नवग्रहस्तोत्र तथा विष्णुपञ्जर स्तोत्र	०—।।।
नानकादिगुरु स्तोत्र— मलाधर विरचित	०—४

रा.	नाम.	की. रु. आ.	रा.
१०	नृसिंहसहस्रनाम	०—२	
	पुरुषोत्तमसहस्रनाम—भागवतोद्धृत	०—१॥	
	पुष्पाञ्जलिस्तोत्र	०—॥।	
	बगलामुखीस्तोत्र ...	०—१	
	वटुकभैरवस्तोत्र	०—१॥	१०
	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर—(सचित्र गुटका)	०—१०	
	ककारादि कृष्णसहस्रनाम—ऐरामी		

नाम.	की. रु. आ.
गुटका	०—८
कालिकासहस्रनाम	०—४
गणेशसहस्रनामावली ...	०—१॥
गजेन्द्रमोक्ष—भाषाटीका सहित ...	०—३
" तथा केवल भाषा ...	०—१॥
गङ्गाष्टक	०—॥
गङ्गालहरी-मूल पंडितराय-जगन्नाथ	

जा.	नाम.	की. रु. आ.	रा.
११	कृत गंगाजीकी स्तुति ...	०—१॥	
	गङ्गालहरी-भाषाटीका सहित अर्गल पुरस्थ पं० राधाकृष्णशर्मकृता-न्वय भाषानुवाद तथा सेठ कन्हैयालाल पोद्दार प्रणीत सम श्लोकी भाषापद्य समेत ...	०—२	११
	तुलसीसहस्रनाम	०—१॥	

नाम.		की. रु. आ.
द्रव्यस्तोत्र-भाषाटीकासमेत.	...	०-१॥
देवीउपासना-क्षमापनस्तोत्र	...	०-१
मकारादि श्रीरामसहस्रनाम.	...	०-३
मृत्युञ्जयस्तोत्ररुद्रयामलोक्त	...	०-१॥
यमुनासहस्रनाम ...	...	०-१॥
रकारादिश्रीरामसहस्रनाम-(ब्रह्मयामलोक्त) ...	...	०-३

आ.	नाम.		की. रु. आ.	रा.
१२	तथा मकारादि और रकारादि- श्रीरामसहस्रनाम (रुद्रयामलोक्त) दोनों पुस्तकोंका एक गुटका		०-६	
	रामसहस्रनाम.	... ...	०-१॥	
	रामसन्मङ्गलस्तोत्र	... ...	०-१	१२
	शिवताण्डवस्तोत्र-पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत भाषाटीकासमेत.		०-१	

नाम. की. रु.आ.

अध्यात्मरामायण–स्व० पं० बलदेवप्रसाद-मिश्र कृतभाषाटीकासमेत। जिसमें श्रीराम-चन्द्रजीका संपूर्णचारित्र वर्णितहै। यह गुप्त-रामायण शिवजीने पार्वतीको कहा और यही ज्ञानामृत ब्रह्माजीसे नारदजीने उप-देश लिया और नारदजीसे वाल्मीकि तथा व्यासने प्राप्त कर नैमिषारण्यमें शौनका-दिसे कहा है। अवश्य संग्राह्य ग्रन्थ है ४–०

जा.	नाम.	की. रु. आ.	डा.
१३	शिवसहस्रनाम–मूल	०--१॥	
	शिवमहिम्न–मूल--बड़े अक्षरका	०--१॥	
	शिवमहिम्न सटीक--अन्वयार्थ भाषा टीका सहित	०--१॥	
	गोपालसहस्रनाम--विद्यावारिधि पं० ज्वलाप्रसादकृत भा० टी०	०--१२	१३
	कर्पूरस्तव व्याख्या-संस्कृत तथा-भाषाटीका सहित पाठको यह		

नाम. की. रु. आ.

वही " दक्षिणकालीके " भक्तोंका छोटासा ग्रन्थ परमोपयोगी है। जिसे प्राप्त करनेको सभी शाक्त इच्छा रखते हैं, लीजिये दाम भी थोड़ा रक्खा है ... ... ०—२

वेदोक्तशिवार्चन-(शिवपूजाविधान) ०—४

शतनामाकरस्तोत्र ... ... ०—।।।

जा.	नाम.	की. रु. आ.	रा.
१४	शनिमृत्युञ्जयस्तोत्र	०–१॥	
	लक्ष्मीनारायणहृदय–लक्ष्मीदेवीकी स्तुति करनेसे दारिद्र्य दूर होताहै	०–३	
	आदित्यहृदयबड़ा अक्षर–सूर्यनारायण की आराधना	०–३	
	पुरुषोत्तम सहस्रनाम-भागवतोद्धृत.	०–१॥	१४
	विष्णुसहस्रनामावली पुष्प तथा तुलसी		

नाम.	की. रु. आ.
भगवान्पर अर्पण करनेमें सुगमताके साथपृथक् २ नाम हैं ...	०—१॥
गोपालसहस्रनामावली ..	०—२
हनुमान् सहस्रनामावली ...	०—२
श्रीरामसहस्रनामावली ...	०—२
गंगालहरीमूल—पं० जगन्नाथकृत	
गंगाजीकी स्तुति	०—१॥

इति

कमलनेत्रस्तोत्रं

समाप्तम् ।

वि० वैतो दिशः ॥ १३ ॥ त्रिविक्रमस्तु मे क०
देवः सर्वान् पापान् निकृन्ततु ॥ तथा
४ नारायणो देवो बुद्धिं पालयतां मम १४
शेषो मे निर्मलं ज्ञानं करोत्वज्ञानना-
शनम् ॥ बड़वामुखो नाशयतु कल्मषं
यत् कृतं मया ॥ १५ ॥ पद्भ्यां ददातु
परमो मुखं मूर्ध्नि मम प्रभुः ॥ दत्तात्रे- ४

यः कलयतु सपुत्रपशुबान्धवम् ॥ १६॥
सर्वानरीन् नाशयतु रामः परशुना
मम ॥रक्षोघ्नस्तु दाशरथिः पातु नित्यं
महाभुजः॥ १७ ॥ शत्रून् हलेन मे ह-
न्याद्रामो यादवनन्दनः ॥ १८ ॥ प्रल-
म्ब-केशी-चाणूर-पूतना-कंसनाशनः ॥

कृष्णस्य यो बालभावः स मे कामान्

वि० प्रयच्छतु ॥ १९ ॥ अन्धकारतमोघोरं क०
५ पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ॥ पश्यामि भयस-
न्त्रस्तः पाशहस्तमिवान्तकम् ॥ २० ॥
ततोऽहं पुण्डरीकाक्षमच्युतं शरणं
गतः ॥ धन्योऽहं निर्भयो नित्यं यस्य
मे भगवान् हरिः ॥२१॥ ध्यात्वा नारा- ५
यणं देवं सर्वोपद्रवनाशनम् । वैष्णवं

कवचं बद्ध्वा विचरामि महीतले ॥२२॥
अप्रधृष्योऽस्मि भूतानां सर्वदेवमयो
ह्यहम् । स्मरणाद्देवदेवस्य विष्णोरमि-
ततेजसः ॥२३॥ सिद्धिर्भवतु मे नित्यं
यथामन्त्रमुदाहृतम् ॥२४॥ यो मां
पश्यति चक्षुर्भ्यां यंच पश्यामि चक्षु-
षा ॥ सर्वेषां [illegible]दुष्टानां विष्णुर्बध्नाति

चक्षुषा ॥ २५ ॥ वासुदेवस्य यच्चक्रं तस्य
चक्रस्य ये त्वराः ॥ ते हि चिच्छन्दन्तु
पापान् मे मम हिंसन्तु हिंसकान् २६ ॥
राक्षसेषु पिशाचेषु कान्तारेष्वटवीषु
च ॥ विवादे राजमार्गेषु द्यूतेषु कलहेषु
च ॥ २७ ॥ नदीसन्तरणे घोरे सम्प्राप्ते
प्राणसंशये ॥ अग्निचौरनिपातेषु स-

र्वग्रहनिवारणे ॥ २८ ॥ विद्युत्सर्पवि-
षोद्वेगे रोगेऽथ विघ्नसङ्कटे ॥ जप्यमेत-
ज्जपेन्नित्यं शरीरे भयमागते ॥ २९ ॥
अयं भगवतो मन्त्रो मन्त्राणां परमो
महान् ॥ विख्यातं कवचं गुह्यं सर्वपा-
पप्रणाशनम् ॥३०॥ स्वमायाकृतनिर्मा
णकल्पान्तगहने महत् ॥ अनाद्यन्त

जगद्बीज पद्मनाभं नमोऽस्तुते ॥ ३१ ॥
ॐ कालाय स्वाहा । ॐ कालपुरु-
षाय स्वाहा । ॐ कृष्णाय स्वाहा ।
ॐ कृष्णरूपाय स्वाहा । ॐ चण्डाय
स्वाहा । ॐ चण्डरूपाय स्वाहा । ॐ
प्रचण्डाय स्वाहा । ॐ प्रचण्डरूपाय
स्वाहा । ॐ सर्वाय स्वाहा । ॐ सर्व-

रूपाय स्वाहा। ॐ नमो भुवनेशाय त्रि-
लोकधात्रे इह विटि सिविटि सिविटि
स्वाहा। ॐ नमः अयोखेतये ये ये सं-
ज्ञायापात्रदैत्य-दानव-यक्ष-राक्षस-भू-
तपिशाच-कुष्माण्डान्तापस्मारक-
च्छर्द्दन-दुर्द्धराणामैकाहिक-द्वितीय-
तृतीय-चातुर्थक-मौहूर्तिक-दिनज्वर-

रात्रिज्वर-सन्ध्याज्वर-सर्वज्वरादीनां
लूताकीट-कण्टक-पूतना-भुजङ्ग-स्था-
वर-जङ्गमाविषादीनामिदं शरीरं मम
पथ्यं तुम्बुरु स्फुट स्फुट प्रकोट लफट
विकटदंष्ट्र पूर्वतो रक्षतु। ॐ हैं हैं हैं हैं दि
नकरसहस्रकालसमाहतो जयपार्श्वि-
मतो रक्ष। ॐ निवि निवि प्रदीप्तज्व-

लनज्वालाकार महाकपिल उत्तरतो
रक्ष ॐ विलि विलि मिलि मिलि गरुडि
गरुडि गौरी-गान्धारी-विषमोह विष-
मविषमां मोहयतु स्वाहा दक्षिणतो रक्ष
मां पश्य सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो रक्ष
रक्ष जय जय विजय तेन हीयतेरिपु-
त्रासाहङ्कृतवाद्यतो भयरुद्रयतोभयो

वि० अभयं दिशतु च्युतः तदुदरमाखिलं क०
विशन्तु युगपारिवर्त्तसहस्रसंख्येयोऽस्त
१ मलमिव प्रविशन्ति रश्मयः ॥ ३१ ॥
वासुदेव-सङ्कर्षण-प्रद्युम्नाश्चानिरुद्धकाः
सर्वज्वरान् मम घ्नन्तु विष्णुर्नारायणो
हरिः ॥३२॥ इति श्रीगारुडे महापुराणे विष्णु- ९
कवचकथनं नाम द्विशततमोऽध्यायः ॥ २०० ॥

स्तोत्रपाठग्रन्थाः।

१ शाक्तप्रमोददशमहाविद्या और पांच देवतोंका पञ्चाङ्ग द्वादशांग सहित इसमें १८४ विषयहैं शाक्तलोगोंको अवश्य लेना चाहिये ५-० ०-८

२ श्रीरामरक्षास्तोत्र-श्रीराममहिमस्तोत्र-विष्णुपञ्जरस्तोत्र-श्रीवेङ्कटेशाष्टकस्तो-त्रेतिस्तोत्रचतुष्टयम्.................०-३ ०-॥

३	दुर्गासप्तशती शान्तनवीटीका-सहित	१–४	०–४
४	दुर्गासप्तशती भट्टनागोजीकृत-टीकासहित	१–०	०–२
५	दुर्गासप्तशती भाषाटीका शान्तनवी टीकाके अनुकूल	१–०	०–२
६	४३४ दुर्गासप्तशती मोटे अक्षरकी टाईप खुली पंक्ति ६ की ...	१–०	०–२

७ ४३५	दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिवाली बड़ा अक्षर खुला पत्रा	०—१२	०—२
८	दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिकी बंधेली	१—०	०—२
९	दुर्गासप्तशती १० पंक्तिवाली मध्यम अक्षर टाईप खुला पत्रा	०—८	०—१
१०	दुर्गासप्तशती १० पंक्तिवाली बंधेली रेशमी	०—१२	०—२
११	दुर्गासप्तशती ३२ पेजी गुटका	०—१०	०—२

१२	तथा खुला पत्रा टाईपका	०—७	०—१
१३	दुर्गासप्तशती छोटा गुटका बा.	०—६	०—१
१४	संतानगोपालस्तोत्र	०—२	०—॥
१५	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर १४४ स्तोत्रसं.	१—०	०—२
१६	स्तोत्ररत्नाकर भाग २ रा छपता है.	१—०	०—३
१७	गुरुपीयूषलहरी गुरूनानकसाहेब-के मतकी..............................	०—६	०—१
१८	वेङ्कटेशसहस्रनाम सटीक.......	०—८	०—१

१९	वेङ्कटेशसहस्रनाम मोटा	०—४	०—१
२०	राधाकृष्णभूषण	०—३	०—॥
२१	कालिकासहस्रनाम	०—४	०—॥
२२	गायत्रीपुरश्चरण	०—२	०—॥
२३	गायत्रीपञ्चाङ्ग	०—१२	०—२
२४	लक्ष्मीनारायणहृदय	०—४	०—॥
२५	लक्ष्मीस्तोत्र	०—२	०—॥
२६	आदित्यहृदय बडा	०—४	०—॥

ाहि-
३

२७	आदित्यहृदय छोटा अक्षर....	०—१॥	०—॥
२८	पुरुषोत्तमसहस्रनाम	०—२	०—॥
२९	विष्णुसहस्रनामावली	०—२	०—॥
३०	शिवसहस्रनामावली	०—२	०—॥
३१	गणेशसहस्रनामावली	०—२	०—॥
३२	देवीसहस्रनामावली	०—२	०—॥
३३	वेङ्कटेशसहस्रनामावली	०—२	०—॥
३४	सूर्यसहस्रनामावली	०—२	०—॥

रात.
३

३५	गङ्गालहरी मूल	०—१॥	०—॥
३६	विष्णुसहस्रनाम बडे अक्षरका खु	०—८	०—१
३७	विष्णुसहस्रनाम दीपिकाभाषाटीका	१—०	०—२
३८	विष्णुसहस्रनाम चन्द्रिकाभाषाटीका	०—१२	०—२
३९	विष्णुसहस्रनाम सटीक शाङ्करभाष्य सह	०—८	०—१

ाहि-				रात.
	४०	विष्णुसहस्रनाम सादा..........	०—२	०—॥
	४१	विष्णुसहस्रनामगुटका चित्रसहित	०—५	०—॥
४	४२	विष्णुसहस्रनाम मध्यम............	०—१॥	०—॥
	४३	गोपालसहस्रनामावली............	०—३	०—॥
	४४	चर्पटपञ्जरी भाषाटीका	०—१	०— ॥
	४५	विष्णुसहस्रनाम भा० टी०........	०—८	०—१
	४६	गोपालसहस्रनाम राधास्तोत्र सहित छोटाअक्षर	०—२	०—॥ ४

४८	गोपालसहस्रनाम बडा अक्षर खुला	०—४	०—॥
४९	गोपालसहस्रनाम गुटका रेशमी	०—५	०—॥
५०	शिवसहस्रनाम	०—२	०—॥
५१	शिवविनयशतक	०—१॥	०—॥
५२	भवानीसहस्रनाम	०—४	०—॥
५३	तुलसीकवच..........................	०—२	०—॥
५४	शिवमहिम्न [illegible] अन्वयार्थ- [illegible]लगीत, म[illegible]	०—३	०—॥

रात.



श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः
श्री[illegible]नमणये ॥ ॐ अस्य श्री-
[illegible]वचस्तोत्रमंत्रस्य भार्गव
[illegible] । गायत्री छंदः । श्री [illegible]
[illegible] देवता । ह्रां बीजं । नमःश-

सू० क्तिः सूर्यस्तत्त्वं। श्रीसवितास- क०

र्यनारायणप्रीत्यर्थें कवचपा-

विनियोगः॥ भार्गवऋषये नमः

शिरसि। गायत्रीछंदसे नमः मु- २

खे। आदित्यदेवतायै नमः हृदि।

ह्रां बीजाय नमः गुह्ये। शक्तये

नमः पादयोः। ह्रां भास्कराय

विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि

तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इति

मंत्रः ॥ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां ०। ...

र्जनीभ्यां ०। ह्रूं मध्यमाभ्यां ...

ह्रैं अनामिका० । ह्रौं कनिष्ठि-

का०।एवं हृदयादिः॥ अथ ध्या- ३

नं ॥ रक्तांबुजासनमशेषगुणैक-

सिंधुं भानुं समस्तजगतामधिपं

भजामि ॥ पद्मद्वयाभयवरान्

दधतं कराब्जैर्माणिक्यमौलि-

मरुणांगरुचिं त्रिनेत्रं [illegible]

ह्रंसः सूर्याय स्वाहा ॥ [illegible] ...

व ॥ सांब सां[illegible]

कवचं शु[illegible]मध्यमा[illegible]ा-

नाम कवच परमाद्भुत[illegible]

यज्ज्ञात्वा मंत्रवित्सम्यक् फल- ४

माप्नोति निश्चितम् ॥ यज्ज्ञात्वा

च महादेवो गणानामधिपाम-
वत् ॥ २ ॥ पठनाद्धारणाद्विष्णु-
सर्वेषां पालकस्सदा ॥ ऋषि-
वृद्धयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवा-
॥ ३ ॥ कवचस्य [illegible] विर्भावा [illegible]

नेनुष्टुबुदाहृतः ॥ श्रीसूर्यो देव-
ता सर्वदेवनमस्कृतः ॥ भा-
आरोग्यार्थाय मोक्षेषु विनियो-
गः प्रकीर्तितः ॥ ॐ प्रणवो मे ८
शिरः पातु घृणिर्मे पातु भाल-

कम् ॥ सूर्योऽव्यान्नयनद्वन्द्वमाद-

त्यः कर्णयुग्मकम् ॥ ५ ॥ अघा-

रो महामंत्रः [illegible]-

प्रदः ॥ ह्रां बीजं मे मुखं [illegible] ॥

हृदयं [illegible] ॥ [illegible]

यं विसर्गाढ्यं पातु मयी देव-
कम् ॥ अक्षरोसौ महा[illegible]
तं तंत्रेषु गोपि[illegible] ७ ॥ शि[illegible]
वह्निसमायुक्तो वामाक्षिबिंदु-
भूषित: ॥ एकाक्षरो महामंत्र:

सर्वतंत्रेषु गोपतः ॥ ८ ॥ गुह्याद्

गुह्यतरो मंत्रो वांछाचिंतामणि-

णिः स्मृतः ॥ [illegible] पादपर्यंतं

सदा मां पात्वनुत्तमः ॥ ९ ॥

इति ते कथितं दिव्यं [illegible]

केषु दुर्लभम् ॥ श्रीप्रदं वैदेव

दं दिव्यं धनारोग्यविवर्धनम्

॥ १० ॥ कुष्ठ[illegible]गशमनं म-

हाव्याधिविनाशनम् ॥ त्रिसं- ७

ध्यं यः पठन्नित्यं आरोग्यबल-

वान्भवेत् ॥ बहुना किमिहोक्ते-
न यद्यन्मनसि वर्त्तते ॥ ११ ॥
एतत्सर्वं भवेद्दव कवचस्य (र-
धारणात् ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च
यक्षगंधर्वराक्षसाः ॥

ग्रहराक्षसवेताला न द्रष्टुमपि सं-
क्षमाः॥ दूरादेव पलायंते तस्य
संकीर्तनादपि॥ १३॥ भूर्जे च
समालिख्य रोचनागरुकुंकुमैः॥ ८
रविवारे च संक्रांतौ सप्तम्यां च

विशेषतः ॥ १४ ॥ धारयेत्साध-
कः श्रेष्ठस्त्रैलोक्ये विजयी भवे-
त् ॥ त्रिलोहमध्यमं कृत्वा धार-
येद्दक्षिणे भुजे ॥ १५ ॥ शिखा-
यामथवा कंठे [illegible]

म० संशयः ॥ इति ते कथितं सांब-
१ त्रैलोकयमंगलादिकम् ॥ १६ ॥
कवचं दुर्लभं लोके तव स्नेहा-
त्प्रकाशितम् ॥ अज्ञात्वा कवचं १
दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम्

७४८	गोविंदनामगीता	क	०-८	० १
७४९	गोपालपद्धति	टा	०-३	०-॥)
७५०	गोपालसहस्रनाम राधास्तोत्रसहित छोटा	क	०-२	०-॥)
७५१	गोपालसहस्रनाम बडा अक्षर खुला	क	०-३	०-॥)
७५२	गोपालसहस्रनाम गुटका रेशमी	क	०-५	०-॥)
७५३	चतुःश्लोकीभागवत और सप्तश्लोकीगीता	क	०-॥	०-॥)
७५४	चण्डिकास्तोत्र	खे	०-१॥	०-॥)
७५५	चर्पटपञ्जरी मूल	क	०-॥	०-॥)
७५६	चर्पटपञ्जरी भाषाटीका	क	०-१	०-॥)
७५७	चोवीसगायत्री	टा	०-४	०-॥)
७५८	जगन्नाथाष्टक	क	०-॥	०-॥)

७५९	ज्वरस्तोत्र भा० टी०	क	०-॥	०-॥
७६०	तुळसीकवच	क	०-२	०-॥
७६१	तुळसीसहस्रनाम	मुं	०-२॥	०-॥
७६२	दत्तकारुण्यलहरी संस्कृत	क	०-१	०-॥
७६३	दत्तकारुण्यलहरी भाषाटीका	क	०-२	०-॥
७६४	दारिद्र्यमोचनाष्टक	क	०-१	०-॥
७६५	दुर्गासप्तटीका	क	३-०	०-६
७६६	दुर्गासप्तशती शान्तनवीटीकासहित....	क	१-४	०-२
७६७	दुर्गासप्तशती भाषाटीका (शान्तनवी संस्कृत टीकाके अनुकूल)	क	१-०	०-२
७६८	दुर्गासप्तशती भट्टनागोजीकृत-टीकासहित	क	१-०	०-२

७६९ दुर्गासप्तशती मोटे अक्षरकी टाईप खुली पंक्ती ६ की	क	१-०	०-२
७७० दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिवाली बडा अक्षर खुलापत्रा	क	०-१२	०-३
७७१ दुर्गासप्तशती ७ पंक्तिकी बंधेली रेशमी	क	१-०	०-३
७७२ दुर्गासप्तशती १० पंक्तिवाली मध्यम अक्षर टाईप खुला पत्रा	क	०-८	०-१
७७३ दुर्गासप्तशती १० पंक्तिवाली बंधेली रेशमी.	क	०-१२	०-३
७७४ दुर्गासप्तशती छोटा गुटका ६४ पेजी	क	०-६	०-१
७७५ दुर्गासप्तशती ३२ पेजी गुटका	क	०-८	०-१
७७६ „ तथा खुला पत्रा टाईपका	क	०-६	०-१

७७७	देवीकवच भा० टी०	क	०-१	०-॥
७७८	देवीसहस्रनामावली	क	०-२	०-॥
७७९	देव्यापराधक्षमापन स्तोत्र भा० टी०	क	०-१	०-॥
७८०	द्रव्यस्तोत्र भाषाटीका	ख	०-१॥	०-॥
७८१	ध्यानमंजरी-(रहस्य ग्रंथ) अग्रस्वामीकृत.	दा	०-१	०-॥
७८२	नर्मदाष्टक	क	०-॥	०-॥
७८३	नारायणकवच मूल	क	०-१॥	०-॥
७८४	नृसिंहसहस्रनाम	ख	०-३	०-॥
७८५	नृसिंहकवच	क	०-१	०-॥
७८६	परमेश्वरशतक	क	०-५	०-॥
७८७	पंचस्तवी-रघुपति शास्त्रिकृत	क	०-२	०-॥

७८८	पुरश्चरणदीपिका	ख	०—३	०—॥
७८९	पुरुषोत्तमसहस्रनाम	क	०—२	०—॥
७९०	पुष्पांजलिस्तोत्र	क	०—१	०—॥
७९१	प्रत्यङ्गिरापंचांग	क	०—८	०—१
७९२	बटुकभैरव स्तोत्र	क	०—१॥	०—॥
७९३	बगलामुखीस्तोत्र	क	०—१	०—॥
७९४	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर १४५ स्तोत्रसंख्या.	क	१—०	०—२
७९५	भवानीसहस्रनाम	क	०—४	०—॥
७९६	भवानीमानसिक पूजन	क	०—१	०—॥
७९७	भैरवसहस्रनाम	क	०—२	०—॥
७९८	महाविद्यास्तोत्र ([illegible]).	क	०—१	०—॥

७९९	महामृत्युंजय जपविधी भाषाटीका	क	०–२	०–॥
८००	मंत्रमहोदधि सटीक सटिप्पण मातृका कोष तथा अनुष्ठानिकयंत्रोंसमेत	खे	३–०	०–६
८०१	मन्त्रसंध्योपासननित्यतर्पणलघुप्रयोगः	क	०–१	०–॥
८०२	मोहमोचनब्रह्मज्ञान	क	०–२	०–॥
८०३	मोक्षगीता बडी सवालक्ष रामनाम	क	१–०	०–२
८०४	मृत्युञ्जयस्तोत्र	क	०–१॥	०–॥
८०५	यमुनालहरी भाषाटीका	खे	०–२	०–॥
८०६	रामस्तवराज रामरक्षा बडे अक्षरका गुटका	क	०–५	०–॥
८०७	रामसहस्रनाम	क	०–२	०–॥
८०८	रामस्तवराज सटीक (खुलापाना)	क	०–६	०–२

८०९	रामस्तवराज बडे अक्षरका १६ पेजी	क	०–२	०–॥
८१०	रामस्तवराज छोटे अक्षरका ३२ पेजी	क	०–१	०–॥
८११	रामरक्षा मूल	क	०–१	०–॥
***	रामरक्षा भाषाटीका	क	०–२	०–॥
८१२	रामस्तवराज अत्यन्त बडे अक्षरका	क	०–३	०–॥
८१३	रामसहस्रनामावली	रा	०–२	०–॥
८१४	राधाकृष्णभूषण	मु	०–३	०–॥
८१५	रामचंद्रप्रार्थनाष्टक भाषाटीका	क	०–२	०–॥
८१६	राममहिम्न	क	०–१	०–॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण–मुंबई.